Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 1

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2021

सामान्य अध्ययन (राजस्थान)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान की अवस्थिति, आकृति, आकार एवं विस्तार	1
2.	राजस्थान का भौतिक विस्तार	19
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र (नदियाँ)	54
4.	राजस्थान में झीलें	77
5.	राजस्थान की जलवायु एवं विशेषताएँ	89
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	100
7.	राजस्थान के वन्य जीव अभयारण्य	104
8.	राज्य में वन सम्पदा	122
9.	राजस्थान में कृषि	132
10.	राजस्थान में पशुधन	150
11.	राजस्थान में पशुसम्पदा	161
12.	राजस्थान की जनसंख्या	164
13.	राजस्थान में पर्यटन उद्योग	169
14.	राजस्थान में औद्योगिक परिदृश्य	176
15.	राजस्थान में दुर्ग, मंदिर एवं हवेलियाँ	192
16.	राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल	226
17.	राजस्थान के गुर्जर प्रतिहार	231
18.	मेवाड का इतिहास	235
19.	जालौर एवं रणथम्भौर के चौहान	253

2. राजस्थान का भौतिक विस्तार

1. राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश को सर्वप्रथम निर्धारण करने का श्रेय –**''प्रो. वी. सी. मिश्रा''** को दिया जाता है (उच्चावच के आधार पर)। यह निर्धारण अपनी पुस्तक ''**राजस्थान का भूगोल**'' मे 1968 ई. में किया था। इन्होंने राजस्थान को 7 भौतिक प्रदेशों में बाँटा था–
   i. नहरी क्षेत्र – गंगानगर, हनुमानगढ
   ii. पश्चिमी मरुस्थल/शुष्क मरुस्थल – बीकानेर, जोधपुर, पाली, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर
   iii. अर्द्धशुष्क मरुस्थल – चूरु, सीकर, झुँझुनूँ, पाली, जालौर आदि।
   iv. अरावली प्रदेश – राजसमंद, सिरोही, उदयपुर
   v. द. पू. औद्योगिक क्षेत्र – कोटा–बून्दी–बाराँ, झालावाड़, चित्तौड़गढ़–बाँसवाडा आदि।
   vi. पूर्वी कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र
   vii. चम्बल बीहड़ क्षेत्र।

   उच्चावच – ये धरातल पर पायी जाने वाली धरातलीय आकृतियाँ होती है, जो निम्न हैं–

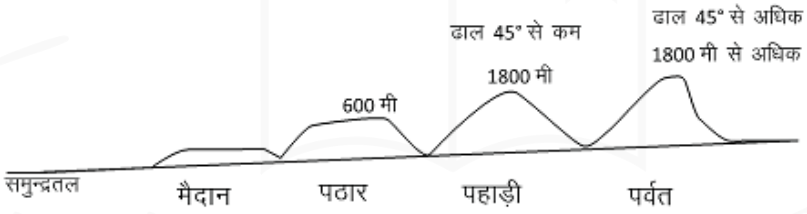

   नोट– सम्पूर्ण भारत मे धरातल के विभिन्न भागों की ऊँचाई नापने के लिए – चेन्नई तट का उपयोग किया जाता है।
2. राजस्थान का दूसरी बार जलवायु के आधार पर निर्धारण– एस.के. सेन ने 1968 ई. में किया जिसमें इन्होंने राजस्थान को तीन भागों में बाँटा था।
3. राजस्थान का तीसरी बार भौतिक प्रदेशों के रूप में विभाजन 1971 ई. में रामलोचन सिंह द्वारा किया, जो निम्न है –
   A. सबसे पहले राज. को दो भागों मे बाँटा– राजस्थान मैदानी, राजस्थान पहाड़ी भाग
   B. आगे इनको 4 उप विभागों मे बाँटा, पुनः इनको 12 उप विभागों मे बाँटा

महत्वपूर्ण

2 मुख्य भाग
↓
4 उप विभाग
↓
12 लघु भाग

वर्तमान वर्गीकरण

प्रो. ए.के. तिवारी व डॉ. एच. एम. सक्सेना ने 1994 में पुस्तक 'राजस्थान का प्रादेशिक भूगोल' में इसका वर्णन किया। इन्होंने राजस्थान को 4 भौतिक प्रदेशो में बाँटा है–

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. अरावली पर्वतमाला
3. पूर्वी मैदान भाग
4. दक्षिण पूर्वी पठारी भाग

राजस्थान के भू–आकृतिक स्वरूप बहुत प्राचीन है और लम्बे समय की अपरदन एवं निक्षेपण प्रक्रियाओं से बने है।

भौतिक प्रदेशो का निर्माण

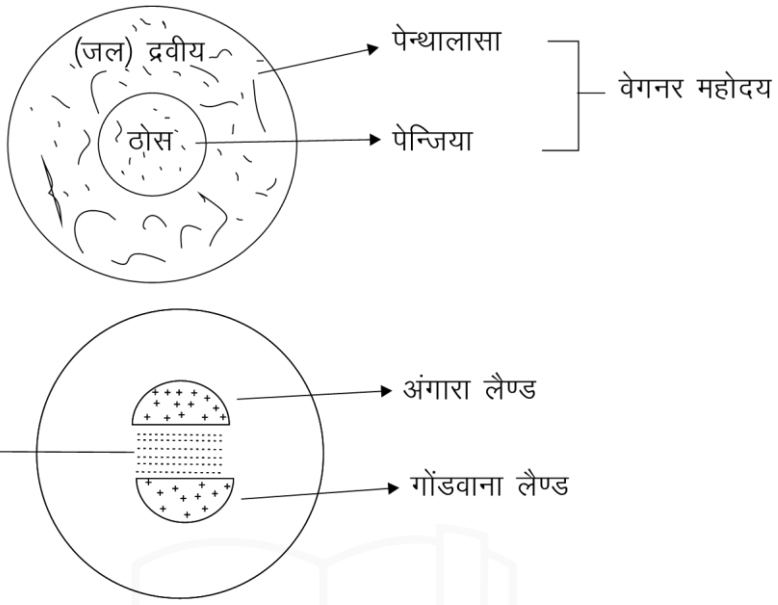

- पेंजिया का विभाजन – चंद्रमा के गुरूत्व बल से हुआ है।
- यह विभाजन कार्बोनिफेरस युग में हुआ था।
- टेथिस सागर पेंजिया का ही अवशेष है।

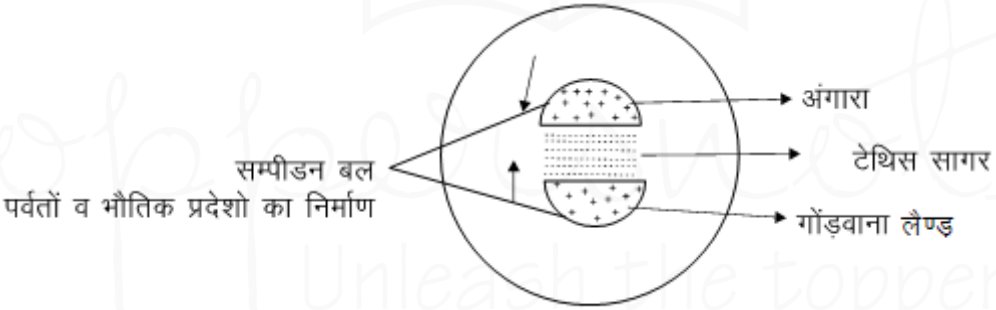

भारत का हिस्सा

राजस्थान

1. पश्चिमी मरुस्थल – थार मरुस्थल
2. पूर्वी मैदान – उत्तर का मैदान
3. अरावली पर्वतमाला – प्रायद्वीपीय पठार
4. द. पू. पठार – प्रायद्वीपीय पठार

भौतिक प्रदेशो का निर्माण के आधार पर क्रम –

1. अरावली पर्वतमाला
2. दक्षिण पूर्वी पठार
3. पूर्वी मैदानी भाग
4. पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश

भौतिक प्रदेश का निर्माण काल

1. अरावली पर्वतमाला – आद्यमहाकल्प – प्रिकैम्ब्रियन युग – Paleozoic Era
2. द. पू. पठार – मध्यजीवी महाकल्प – क्रिटिशियस युग – Mesozoic Era
3. पूर्वी मैदान – नवजीवी महाकल्प – प्लिस्टोसीन युग – Cenozoic Era
4. उ. प. मरुस्थल – नवजीवी महाकल्प – प्लिस्टोसीन युग – Cenozic Era

नोट : पृथ्वी की उत्पत्ति प्रिकैम्ब्रियन युग में हुई।

Time Table of Earth
- आद्य महाकल्प – Paleozoic Era
- मध्य महाकल्प – Mesozoic Era
- नवजीवी महाकल्प – Cenozoic Era

भौतिक प्रदेश	उत्पत्ति/अंग
थार मरुस्थल	टेथिस सागर
अरावली पर्वतमाला	गोंडवाणा लैंड
पूर्वी मैदानी भाग	टेथिस सागर
दक्षिण–पूर्वी पठार	गोंडवाणा लैंड

- मरुस्थल प्रदेश – अवसादी चट्टाने प्राप्त होती है – जैविक अवशेष – अधात्विक खनिज
- अरावली पर्वतमाला – आग्नेय चट्टान (ग्रेनाइट) – धात्विक खनिज
- पूर्वी मैदानी भाग – चट्टानों का अभाव – खनिजों का अभाव
- द.पू. पठार – आग्नेय चट्टाने (बेसाल्ट) – धात्विक खनिज

राजस्थान की प्री–केम्ब्रियन चट्टानों का आधारभूत वर्णन ए.एम. हेरोन ने प्रस्तुत किया।

पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश

यह टेथिस सागर का अवशेष है।

प्रमाण
1. खारे पानी की झीलों का होना।
2. पेट्रोलियम पदार्थों का मिलना।
3. कोयले का जमाव मिलना।
4. समुद्री वनस्पति का होना।

हिस्सा

विश्व के सापेक्ष – अफ्रीका महाद्वीप के सहारा मरुस्थल का भाग है।

यह ग्रेटपोलियो आर्कटिक का भाग है ।

→ सहारा मरु. + अरब मरु. + थार मरु.

भारत के सापेक्ष – पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश – थार मरुस्थल का भाग है।

थार मरुस्थल को पाकिस्तान में 'चेलिस्तान' कहते है।

थार मरुस्थल का विस्तार भारत के 4 राज्यों में हैं –

सर्वाधिक – राजस्थान (1st), गुजरात (2nd), हरियाणा (3rd), पंजाब (4th)

क्षेत्रफल – राज. के 61.11% (209543.25 वर्ग किमी.) – क्षेत्रफल पर स्थित है जहाँ पर 39% जनसंख्या निवास करती है।

विस्तार – कुल 12 जिले आते है।

1. गंगानगर	3. बीकानेर	5. बाड़मेर	7. जोधपुर	9. चूरु	11. झुँझुनूँ
2. हनुमानगढ़	4. जैसलमेर	6. जालौर	8. पाली	10. सीकर	12. नागौर

नोट–

- राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 61% भाग (20,9000 वर्ग किमी क्षेत्र) मुख्य भूमि 1,75000 वर्ग किमी है (कुल 52% भाग पर)
- पश्चिम मरुस्थल थार के मरुस्थल के 62% भाग पर आता है।
- भारत के मरूस्थलीकरण एवं भूअवनयन एटलस के आधार पर राजस्थान मरूस्थलीकरण 67% भाग पर है। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

विस्तार

उत्तर–पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक विस्तार – 640 किमी

उत्तर–पूर्व से दक्षिण पूर्व तक विस्तार – 300 किमी

ढाल – उत्तर–पूर्व से दक्षिण पश्चिम की ओर है।

जनसंख्या – राजस्थान की लगभग 40% जनसंख्या यहाँ पायी जाती हैं।

यह मरुस्थल विश्व में सर्वाधिक जनघनत्व एवं जैव विविधता वाला मरुस्थल है।

पश्चिमी मरुस्थल को Dr. ईश्वर प्रसाद ने 'रूक्ष प्रदेश' कहा था।

मिट्टी – रेतीली/बालू मिट्टी/ ऐरीडोसोल

उत्पादन क्षमता – कम है – नाइट्रोजन का अभाव व ह्यूमस का अभाव

जल ग्रहण क्षमता – कम (बड़े कण वाली मिट्टी)

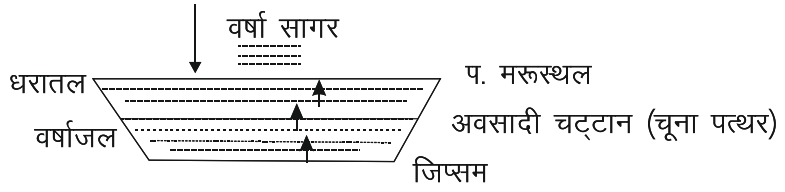

2006 में कवास–बाड़मेर में बाढ़ आयी थी। इसका कारण– भू गर्भ में जिप्सम का जमाव होना था।

वर्षा – 20 से 50 cm वर्षा होती है।

प. मरुस्थल के पश्चिमी सीमा यानी समगाँव – जैसलमेर मे 0 cm. वर्षा होती है। राजस्थान का वनस्पति विहीन क्षेत्र सम गाँव, जैसलमेर है व थार मरुस्थल की पूर्वी सीमा पर 50 सेमी वर्षा होती है।

अर्थव्यवस्था

1. पशुपालन
2. कृषि (खरीफ – ग्वार, मोठ, मूँग, ज्वार, उड़द, बाजरा, तिल, मूँगफली)
   - यहाँ पर चक्रीय कृषि की जाती है।
   - मरुस्थल मे भूमि की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए बोई जाने वाली फसल
     मूँग → मोठ → उड़द – जड़ो में राइजोबियम जीवाणु → नाइट्रोजन क्षमता बढ़ाता है।

वनस्पति

मरुद्भिद वनस्पति / कांटेदार वनस्पति / झाडीनुमा वनस्पति पायी जाती है।
इन्हें जिरोफाइट्स भी कहते हैं।
अपरदन – सबसे अधिक वायु द्वारा होता है। इसका कारण – रेतीली मिट्टी है।
नहर – इंदिरा गाँधी नहर परियोजना (IG NP)

वर्तमान में इस नहर का प्रभाव

1. यहाँ पर वर्तमान में रबी फसल व व्यापारिक फसल का उत्पादन होता है।
2. सेम की समस्या उत्पन्न – राज. मे सर्वाधिक – बड़ोपल (हनुमानगढ़ में सेम की समस्या है) पश्चिमी मरुस्थल में धरातल की बनावट, वर्षा, जलवायु समान नहीं होती है अतः इस प्रदेश को तीन प्रकार से विभाजित किया गया है।

1. वर्षा के आधार पर

- शुष्क मरुस्थल 0-25 cm.
- अर्द्ध शुष्क मरुस्थल 25-50 cm.

2. बालुका स्तूप वितरण आधार पर

- बालुका स्तूप युक्त क्षेत्र
- बालुक स्तूप विहीन क्षेत्र

3. धरातल के आधार पर

- रेग
- इर्ग
- हम्मादा

वर्षा के आधार पर

- शुष्क मरुस्थल (महान मरुस्थल)
  वर्षा – 0-25 cm – बीकानेर, स्तूप युक्त क्षेत्र
  पश्चिम सीमा – 0 cm वर्षा–जैसलमेर (स्तूप रहित क्षेत्र)
  पूर्वी सीमा – 25 cm. वर्षा–बाड़मेर (स्तूप रहित क्षेत्र)
- अर्द्ध शुष्क मरुस्थल
  वर्षा – 25 से 50 cm.
  पश्चिमी सीमा – 25 cm. वर्षा
  पूर्वी सीमा – 50 cm. वर्षा

राज्य में रेतीले शुष्क मैदान एवं अर्द्धशुष्क मैदान को 25 सेमी. सम वर्षा रेखा विभाजित करती है।

Q.1 राजस्थान की वर्षा विभाजन रेखा है ? (First Grade)

1. 50 mm. (1 cm = 10 mm = 50 cm = 500 mm)
2. 150 mm.
3. **500 mm. (Correct Option)**
4. कोई नहीं

Q.2 रेतीले मरुस्थल की पूर्वी सीमा का निर्धारण कौनसी वर्षा रेखा करती है ? (Second Grade)

1. 25 cm.
2. **40 cm. (Correct Option)**
3. 930 cm.
4. कोई नहीं

नोट – 40 cm व 50 cm, दोनो option सहीं होंगे।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश रेडक्लिफ रेखा एवं 50 सेमी समवर्षा रेखा के बीच स्थित है।

शुष्क मरुस्थल

- वर्षा 0 से 25 cm
- जिले – बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
- उपनाम – महान मरुस्थल – बालु का स्तूप युक्त या रेत के टीले अधिक।
- मिट्टी – रेतीली
- अपरदन – वायु अपरदन
- **मरुस्थल मार्च –** बालुका स्तूप का आगे बढना / रेत के टीलो का आगे बढ़ना या मरुस्थल का आगे बढ़ना।
- **प्रसिद्ध स्थान** – नाचना गाँव – जैसलमेर

बालुका स्तूपों का प्रकार [2nd Grade 1st Paper - 2016]

वनस्पति के आधार पर	आकृति के आधार पर
1. वनस्पति विहीन क्षेत्र वनस्पति विहीन क्षेत्र में पाये जाने वाले बालू रेत के विशाल टीलों को धोरे या धरियन कहते हैं एवं उनके मध्य का रास्ता कारवाँ कहलाता है। 2. वनस्पति युक्त क्षेत्र	1. बरखान बालुका स्तूप/अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप 2. अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप 3. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप 4. पैराबोलिक बालुका स्तूप 5. स्क्रकाफिज बालुका स्तूप 6. नेब्यखां बालुका स्तूप 7. तारा बालुका स्तूप 8. नेटवर्क बालुका स्तूप 9. धरियन बालुका स्तूप

1. बरखान बालुका स्तूप/अर्द्धचन्द्राकार बालुका स्तूप

- इसकी आकृति – अर्द्धचन्द्राकार होती है।
- ये स्तूप सर्वाधिक गतिशील एवं सर्वाधिक विनाशकारी होते है।
- क्षेत्र – जैसलमेर – बाड़मेर – ओसियाँ (जोधपुर) – शेखावाटी क्षेत्र, सूरतगढ़, लुणकरणसर

भालेरी (चूरु) मण्डावा (झुँझुनूँ)

- ऊँचाई – 20-30 M.
- चौड़ाई – 100-200 मीटर
- राजस्थान मे सर्वाधिक बालुका स्तूप बरखान पाये जाते है।

2. अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप

इन स्तूपो के तीन प्रकार होते है

1. रेखीय बालुका स्तूप
2. पवनानूवर्ती बालुका स्तूप
3. सीप बालुका स्तूप

↓

- ये स्तूप हवा के समान्तर बनते हैं।
- क्षेत्र – महान मरुस्थल – सर्वाधिक – बाड़मेर में, जैसलमेर, जोधपुर

3. अनुप्रस्थ बालुका स्तूप

- ये स्तूप हवा के समकोण पर बनते है।

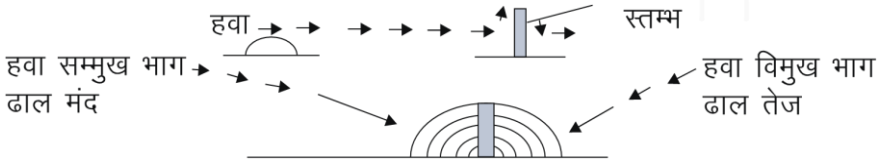

- **क्षेत्र –** जहाँ हवा को रोकने के लिए अवरोध हो–
  जैसलमेर – बाड़मेर – जोधपुर, चूरू, झुँझुनू (शेखावटी), रावतसर (हनुमानगढ़), बीकानेर, सूरतगढ़ (गंगानगर)

4. पैराबोलिक बालुका स्तूप

- यह पेड़ो के सहारे बनते हैं।
- इसे Hairpin बालुका स्तूप भी कहते हैं।
- क्षेत्र – सम्पूर्ण क्षेत्र राज्य का ।

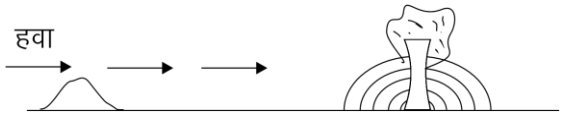

5. स्क्र–काफिज बालुका स्तूप

- ये स्तूप किसी झाडी या आक के सहारे बनते है।
- क्षेत्र – सम्पूर्ण राजस्थान

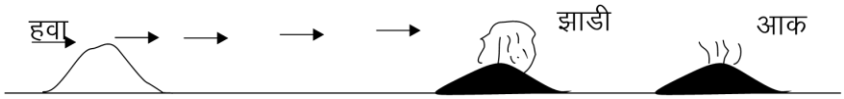

6. नेबखां / नेवछा बालुका स्तूप

- इन स्तूपों का निर्माण वनस्पति के एक ओर ही होता है।

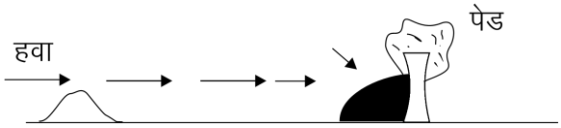

नोट – नेबखां बालुका स्तूप राज्य में नहीं बनते है लेकिन स्क्र–काफिज बालुका स्तूप नेबखां के ही भाग होते है।

7. तारा बालुका स्तूप

- ये चारों ओर से हवा के आगमन से बनते है।

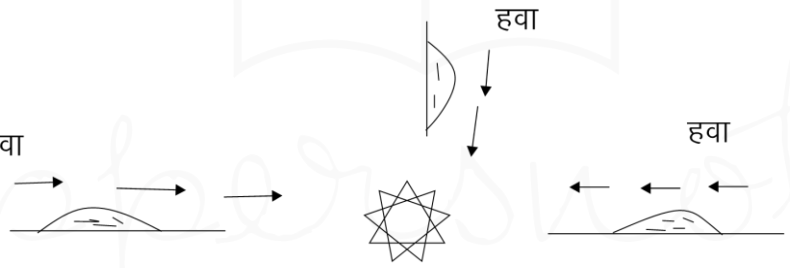

जैसलमेर के आस–पास हम्मादा स्थलाकृति में ऐसे स्तूप मिलते हैं।
क्षेत्र – मोहनगढ – जैसलमेर
सूरतगढ़, अनूपगढ़ – गंगानगर

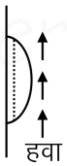

8. नेटवर्क बालुका स्तूप

- मरूस्थल के उत्तर–पूर्वी भाग में पाए जाते है।
- क्षेत्र – हनुमानगढ से सिरसा हिसार (हरियाणा) में बालुका स्तूप एक–दूसरे से जुडे हुए होते है।

9. धरियन बालुका स्तूप

- प्रत्येक बालुका स्तूप के ऊपर मिट्टी का लहर दार जमाव ही धरियन कहलाता है।

जल के स्त्रोत

आगोर – मरुस्थलीय क्षेत्रों में घरों के आंगन में बनी पानी की टंकी होती है।

नाड़ी – छोटी नालियाँ/खेल (पशुओं के जल के लिए)

टोबा – बड़ी खेल/बडी नाली (पशुओं के जल के लिए)

टांका – घर में पानी के लिए टंकी

कुण्ड – वर्षा जल संग्रहण हेतु

बेरी – छोटे कुए को बेरी कहते है।

खड़ीन – खेत में ढाल के विपरीत पाल बनाकर पानी एकत्रित करना खड़ीन कहलाता है। खड़ीन जैसलमेर में पायी जाती है तथा यह पालीवाल ब्रह्मणों द्वारा निर्मित है। इन्हे प्लाया भी कहते है।

झील – इसे सर/टाड/रन/प्लाया झील भी कहते हैं।

↓ प्राकृतिक ↓ कृत्रिम

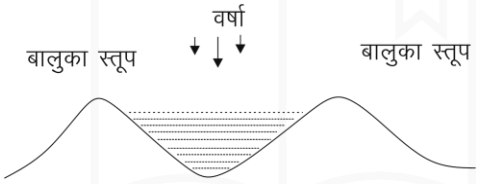

- ये झीलें बालुका स्तूपों के मध्य वर्षा जल से निर्मित होती है।
- ये झीलें अस्थायी व दलदली होती है।
- ये झीले खारे पानी की होती है। सर्वाधिक – जैसलमेर
- शुष्क मरूस्थल प्रदेश में बालुका स्तूपों के बीच में कहीं–कहीं निम्न भूमि मिलती है, जिसमें वर्षा का जल भर जाने से अस्थायी झीलों का निर्माण होता है इन्हें 'रन' कहते है।

उदाहरण – प्रमुख रन निम्न हैं –

जोधपुर – बाप व लावा झील

बाडमेर – थोब झील

जैसलमेर – कनोड, पोकरण, भाकरी झील, बरमसर झील, लवा

चुरु – तालछापर, परिहारा या रणक्षेत्र झील

जयपुर – सांभर झील

नोट – परमाणु परीक्षण स्थल – पोकरण

I चरण	II चरण
18 मई, 1974	(a) 11 मई, 1998
नाम – स्माईलिंग बुद्धा	(b) 13 मई, 1998
प्रधानमंत्री – इंदिरा गाँधी	नाम – ऑपरेशन शक्ति
	प्रधानमंत्री – अटल बिहारी वाजपेयी

- सेलीना झील – उच्च लवणता वाली झील है।
- प्लाया झील सूखने के बाद वहाँ पर कृषि की जाती है इसे प्लाया कृषि/ खड़ीन कृषि कहते है।
- उपजाऊ भूमि – महरों कहलाती है।
- बेझड कृषि – गेहूँ + चना + जौ
- प. राजस्थान में रेबारी व देवासी समाज को रायका कहा जाता है व घरो को ठण्डी कहते है।
  राईका कृषि – सरसों + तारामीरा की कृषि करना
- बाप बोल्डर व भादुरा बोल्डर – जोधपुर
  - ये गोल चिकने पत्थर है।
  - इसका संबंध – पर्मो कार्बोनिफेरिस युग से है

लाठी सीरीज

- जैसलमेर में भूगर्भिक मीठे जल की पट्टी है।

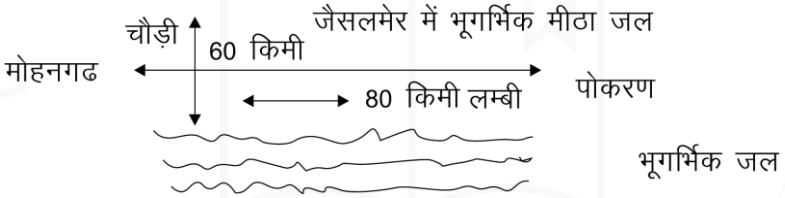

- इस जल पट्टी के मध्य एक चांदन नलकूप है, जिसे थार का घडा कहते है।
- इस जलपट्टी पर सेवण, कुरड, मुराल घास पायी जाती है।
- ये सभी घासें प्रोटीन युक्त घास होती है।
- सेवण घास का वैज्ञानिक नाम – लसीथुरस सीडिकुश
- सूखने पर इस घास को लिलोण कहते है।
- सेवण घास गोडावण पक्षी की प्रजनन स्थली है। (प्राकृतिक)/शरण स्थली

नखलिस्तान

- यह मरुस्थल में हरा भरा भाग होता है।
- राजस्थान का नखलिस्तान – गजनेर (बीकानेर) को कहा जाता है।
- लाठी सीरीज थार मरुस्थल में पारिस्थितिकी संतुलन का एक उदाहरण है।
- लाठी सीरीज में जल स्त्रोत है – सरस्वती नदी

प्रोजेक्ट सरस्वती

- लाठी सीरिज में IOC और ONGC के द्वारा सरस्वती नदी को खोजने का अभियान है।
- रिपोर्ट – 26 नवम्बर, 2016 को K.S. वाल्दिया समिति द्वारा
  (i) सरस्वती नदी मिथ्या नदी वास्तविकता है।
  (ii) सरस्वती नदी को जिंदा नदी का दर्जा दिया गया है।

बाटाडू का कुँआ

- यह बाडमेर में है। इसे राजस्थान (रेगिस्तान) का जलमहल कहते है।
- इस कुए का निर्माण सिणधरी रावल गुलाब सिंह ने अकाल राहत कार्य के दौरान करवाया था।
- बाटाडू कुए पर मकराना संगमरमर से गरूड़ की प्रसिद्ध प्रतिमा बनी है जो कुए का मुख्य आकर्षण है।

तनोट माता मंदिर

- यह जैसलमेर में है।
- सैनिकों की कुल देवी व थार की वैष्णोदेवी है।

आंकल वुड फॉसिल्स पार्क

- आंकल गाँव – जैसलमेर
- यहाँ पर समुद्री वनस्पति के अवशेष मिले है।
- जुरेसिक युग के लकड़ियों के अवशेष, डायनासोर के अवशेष मिले हैं।

कुलधरा गाँव (जैसलमेर)

- व्हेलमछली के अवशेष मिले है।
- इसे भुतिया गाँव भी कहते है।
- यहाँ पर कैक्टस गार्डन है।

A. बालुका स्तूप विहीन क्षेत्र [2nd Grade 1st Paper - 2016]

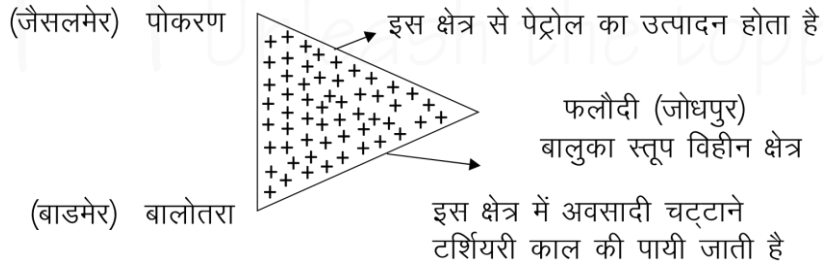

- यह चट्टानी मरुस्थल भाग है जिसे हम्मादा कहते है।
- यह शुष्क मरुस्थल का 41.5% भाग है।
- इसी क्षेत्र में राजस्थान का कोयला उत्पादन होता है।

नोट – पेट्रोलियम व कोयला अवसादी चट्टानो व टर्शियरी युग का पाया जाता है।

B. बालुका स्तूप क्षेत्र

- यह पश्चिम मरुस्थल/शुष्क मरुस्थल के 58.5% भाग पर है।
- सर्वाधिक बालुका स्तूप – जैसलमेर
- सभी प्रकार के बालुका स्तूप – जोधपुर + बाडमेर में मिलते है।

अर्द्धशुष्क मरुस्थल या बांगर प्रदेश

- यह क्षेत्र अरावली पर्वत एवं शुष्क प्रदेश के मध्य क्षेत्र में स्थित है।
- 25 सेमी. की सम वर्षा रेखा रेतीली मरुभूमि व अर्द्धशुष्क मैदान को विभाजित करती है। यह क्षेत्र आन्तरिक प्रवाह क्षेत्र में आता है।
- यह क्षेत्र अरावली पर्वत श्रृंखला के पश्चिम भाग में लूनी नदी जल प्रवाह क्षेत्र में यह यह मैदान अवस्थित है।
- वर्षा – 25 से 50 सेमी पश्चिमी सीमा – 25 सेमी व पूर्वी सीमा – 50 सेमी है।

[2nd Grade 1st Paper - 2016]

- इस मरुस्थल को चार उपभागों में विभाजित किया गया है।

  उपविभाजन – I. घग्घर बेसिन
  II. कांतली बेसिन
  II. नागौरी उच्च भूमि
  III. लूणी बेसिन

I. घग्घर बेसिन

- यहाँ घग्घर नदी बहती है।
- इस बेसिन के अंतर्गत हनुमानगढ व श्रीगंगानगर जिलों का 75% भाग आता है।
- इस क्षेत्र में नहरों से सिंचाई अधिक होती है।
- सेम की समस्या क्षारीयता, अम्लता, जल भराव की समस्या, मरुस्थलीकरण की यहाँ प्रमुख समस्या है।
- रसदार फलों का उत्पादन होता है।
- गेहूँ व चावल का उत्पादन होता है।

II. कांतली बेसिन

- इसे बांगर प्रदेश के नाम से भी जाना जाता है।
- चूरु, सीकर, झुंझुनूँ का क्षेत्र
- शेखावटी क्षेत्र/शेखावटी बेसिन, कांतली बेसिन
- यहाँ ज्यादातर बरखान (अर्द्धवृत्ताकार) प्रकार के मिलते है।
- खरीफ फसल का उत्पादन होता है।
- सिंचाई द्वारा रबी फसल का भी उत्पादन होता है।
- यहाँ सांभर आंतरिक जल प्रवाह का उत्तम उदाहरण है जिसमें मेंढा, खारी, रूपनगर नदियाँ मिलती है।
- इस क्षेत्र में कच्चे एवं पक्के कुओं का निर्माण किया जाता है जिसे जोहड़, नाड़ा कहते है जैसे – जसूसर, मानसर, सालीसर।
- यहाँ नमकीन पानी के गर्त/रन मिलते हैं जिनमें डेगाणा, परिहारा, कुचामन, सुजानगढ़, तालछापर मुख्य है।

III. नागौरी उच्च भूमि

- जोधपुर–नागौर–पाली क्षेत्र आते है।
- सर्वाधिक फ्लोराइड से प्रभावित क्षेत्र है।
- फ्लोराइड युक्त पानी पीने से फ्लोरोसिस रोग हो जाता है – जायल क्षेत्र मुख्यतः
- इस रोग से हड्डियाँ टेडी–मेढ़ी या बांकी/कूबड के रूप में हो जाती है।

[2nd Grade 1st Papr - 2016]

- इस रोग से प्रभावित क्षेत्र नागौर से अजमेर के मध्य है।
- इस क्षेत्र को कूबड़ पट्टी या बांका पट्टी भी कहते है।
- इस रोग से सर्वाधिक प्रभाव – नागौर – मकराना तहसील का आसरवा गाँव है।
- राजस्थान में सर्वाधिक पानी की कमी यहीं पर है।
- इस क्षेत्र में नमक उत्पत्ति का स्त्रोत गहराई में पाई जाने वाली माइकाशिष्ट नमकीन चट्टाने हैं जिनमें 'केशा कर्षण पद्धति' से नमक सतह पर आता है जो बाद में वाष्पीकरण से सोडियम क्लोराइड बनता है।

IV. लूणी बेसिन

- बाडमेर – जालौर – पाली का भाग है।
- लूणी बेसिन के क्षेत्र को गोडवाड क्षेत्र/बेसिन भी कहते है, लूणी पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख नदी है। **[2nd Grade 1st Paper - 2018]**
- हम्मादा – यह चट्टानी मरुस्थल वाला भाग होता है। क्षेत्रफल सबसे कम होता है।

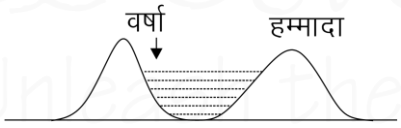

- दो या दो से अधिक हम्मादा स्तूपो के मध्य वर्षा जल एकत्रित हो जाता है। जिले बालसन झील कहते है।
- ढांढ झील – यह मीठे पानी की झील होती है। (सर्वाधिक – बीकानेर)
- रैग – कंकरीला मरुस्थल होता है।
- इर्ग – यह पूर्ण रूप से थार मरुस्थल है। (सम्पूर्ण थार मरुस्थल)
- बालुका स्तूपो के मध्य नीचे वाला भाग – को मरहो कहते है। (उपजाऊ मैदान)

इस क्षेत्र के जालौर में ग्रेनाइट से निर्मित पहाड़ियाँ तथा मलानी रायोलाइट की पहाड़ियाँ गुम्बदाकार या इन्सलवर्ग के रूप में पाई जाती है।

विशेष तथ्य

- थार मरुस्थल की जीवन रेखा – इंदिरा गाँधी नहर
- थार मरुस्थल की प्रमुख नदी – लूणी

- मारवाड का अमृत सरोवर – जवाई बांध – पाली (जवाई नदी – सुमेरपुर, पाली)
- मारवाड की जीवन रेखा – नर्मदा (जालौर – बाडमेर)
- थार मरुस्थल का आर्द्रस्थान – रानीवाड़ा – जालौर
- थार मरुस्थल की सर्वोच्च चोटी – डोसी (जसवंत पुरा–पहाडी), जालौर (869 M.)

नोट : थार मरुस्थल भारत मे मानसून को आकर्षित करता है। क्योंकि यह निम्न वायुदाब केन्द्र है व उच्च तापमान है।

- तापमान – गर्मियों में 49°C सर्दियों – 3°C औसत तापमान – 22°C
- जलवायु – शुष्क व अर्द्धशुष्क
- रोही – अरावली के पश्चिम में हरी घास की पट्टी होती है।
- मारवाड़ का जलमहल – बाटाडू कुँआ– बाड़मेर
- थली – दो बालुका स्तूपो के मध्य का स्थान है जहाँ पर वर्षा से अस्थायी झीलें बन जाती हैं।
- थली/तल्ली पर पैदल चलने का रास्ता – गारो कहलाता है।
- रेतीले बालुका स्तूपों का उपरी भाग – गोर कहलाता है।
- थार मरुस्थल विश्व में मरूस्थील भागों मे जैव विविधता की दृष्टि से प्रथम स्थान रखता है।
- इस भौगोलिक प्रदेश में क्षेत्रफल के अनुपात में जनसंख्या का अनुपात कम – बनता है।
- शेखावाटी में वर्षाजल संग्रहण हेतु कच्चे कुएँ, पक्के – नाड़ा व तालाब बनाते हैं जिसे 'जोहड़' कहते हैं व छोटे तालाबों को 'सर' कहते हैं। (सरोवर)
- गासी – दो रेतीले टीलो के मध्य का भाग या रास्ता है।
- कारवाँ – ऊँटो के झुण्ड को कारवाँ कहते है।
- बजादा – बालू मिट्टी का जमाव – चट्टानी पर्वतों के बाहर या चारों ओर का क्षेत्र।
- गिरी पद – पेडीमेंट – कठोर चट्टानी पर्वतों के चारों ओर पानी का जमाव।
- रेल/नेहड़ – मरुस्थल क्षेत्रफल में विस्तृत पानी का जमाव – मुख्यतः जालौर
- इन्सेलबर्ग – तीपिय पर्वत – रेगिस्तान में कठोर चट्टानी पर्वत होते हैं।
- उर्मिका – बालुका स्तूपो पर बनने वाली लहरदार परतें उर्मिका कहलाती है।
- लघु मरुस्थल – गुजरात के कच्छ से बीकानेर के मध्य मरुस्थल है।

मावट/मावठ [2nd Grade 1st Paper - 2018]

- यह भूमध्य सागरीय पश्चिमी विक्षोभों से शीत ऋतु में होने वाली वर्षा है – इसे गोल्डन ड्रॉप/सुनहरी बून्दें भी कहते है।
- यह वर्षा सबसे उपयोगी रबी फसल के लिए होती है। (प्रमुख खाद्यान्न – गेहूँ)
- यह एक चक्रवात है (भू–मध्य सागरीय चक्रवात है)।
- यह उत्तर–पश्चिम राज. में होती है।

पुरवईया

- ये दक्षिण–पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा से आने वाली मानसून हवायें होती है।
- ये सामयिक पवनें होती है
- लाठी सीरीज मरुस्थल का नखलिस्तान/ओएसिस कहलाता है।

लू

- ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली गर्म व शुष्क स्थानीय पवने ही ''लू'' कहलाती है। सेवण, करड, अज्जन, बुरु/सुंगनी ये इस क्षेत्र की घास हैं।
  (पोकरण) जैसलमेर – बालुका स्तूप युक्त क्षेत्र – बीकानेर 58.50 प्रतिशत

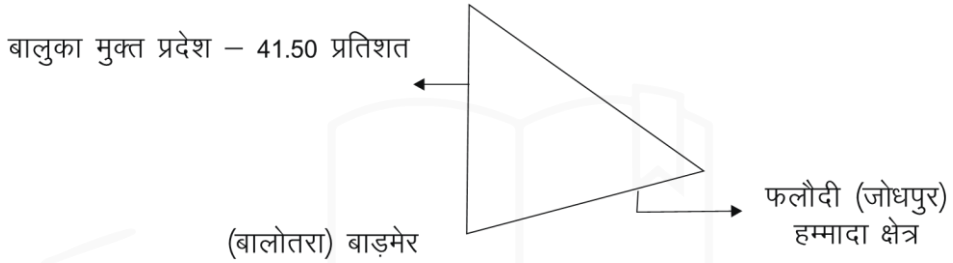

- इस क्षेत्र पर SEEZ की स्थापना की गयी है।
- SEEZ का पूरा नाम – सोलर एनर्जी इंटर प्राइजिंग जोन है।
- SEEZ का अर्थ – सौर ऊर्जा की विपुल सम्भावना है।
- SEEZ की स्थापना – अक्षय ऊर्जा निगम द्वारा की गई है।
- अक्षय ऊर्जा निगम स्थापना – अगस्त, 2000 में। मुख्यालय – जयपुर
- अक्षय ऊर्जा निगम – गैर परम्परागत या नव्यकरण ऊर्जा की संस्था है। इसकी स्थापना 2 कम्पनियों द्वारा की गयी है।
  1. REDA – Rajasthan Energy Development Agency – 1985
  2. RPCL – Rajasthan Power Corporation Limited – 1995
- इन दोनो कम्पनियों द्वारा अगस्त, 2000 में अक्षय ऊर्जा निगम/राजस्थान नव्यकरण/गैस परम्परागत ऊर्जा निगम/राजस्थान सतत् ऊर्जा विकास निगम जो एक राज्य स्तरीय संस्था है।
- बालोतरा व पोकरण के मध्य अवशिष्ट पहाड़ियाँ – मगरा कहलाती है।

थार मरुस्थल

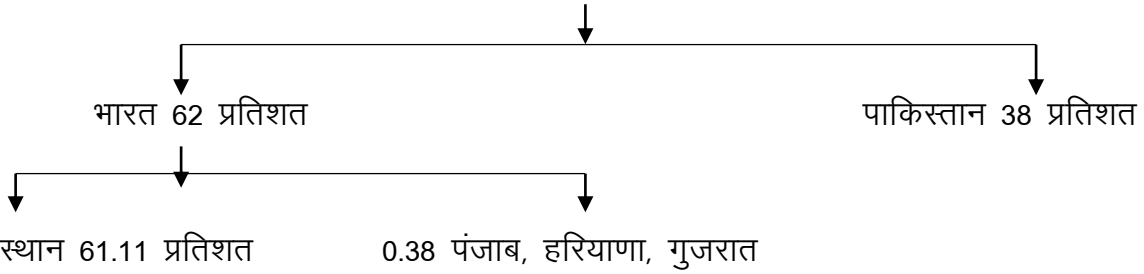

- पश्चिमी मरुस्थल प्रदेश भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र काल को बनाये रखता है।
- **बलुई/रेतीली मृदा** – वैज्ञानिक नाम, एण्टीसोल, राज्य के सर्वाधिक क्षेत्र में है।
- 10 cm सम वर्षा रेखा जैसलमेर जिले से गुजरती है

- मरुस्थल प्रदेश में जनसंख्या घनत्व सबसे न्यूनतम है।
- शेखावटी क्षेत्र में घास के मैदान को ''बीड'' कहते है।
- ढुँढाड़ क्षेत्र में घास के मैदानों को –'बीडा'' कहते है।
- बीहड़ – नदियों द्वारा मिट्टी को काटकर बने गहरे गर्त होते है।
- हाईपन – नागौर व बीकानेर, मध्य जिप्सम का जमाव।
- **छप्पन की पहाड़ी –** सिवाणा व बालोतरा के मध्य पहाड़ियों का समूह है।
  इसी पहाड़ियों के बीच मेवानगर है, जिसमें नाकोडा पर्वत है।
  इस पर्वत पर नाकोडा भैरवनाथ का मंदिर है, जो जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ को समर्पित है। 56 की पहाड़ियों के मध्य एक पिपलुद गाँव है जहाँ पर हल्देश्वर की पहाड़ियाँ है, इस पर हल्देश्वर महादेव का मंदिर स्थित है। इस क्षेत्र पर पश्चिमी राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा होती है अतः इस क्षेत्र को पश्चिमी राजस्थान का माउण्ट आबू/लघु माउण्ट आबू कहते है।
- **रेल/रेला –** जालौर में लूणी नदी का बहाव क्षेत्र रेल/रेला कहलाता है।
- **नेहड़ा/नेष्ठा** – जल संग्रहण विधि है।

परम्परागत जल संरक्षण

- तालाब, बावड़ी, झील, कुआँ, नाडा–टोबा, कुई–नाड़ी/खडीन

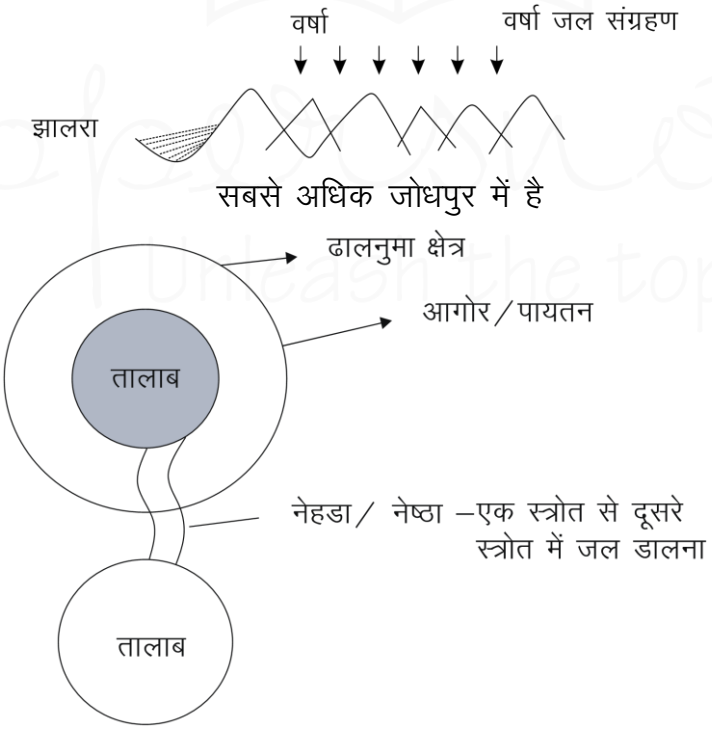

- ग्रेनाइट पर्वत – जालौर जिले में स्थित है।
- सम गाँव – जैसलमेर में स्थित यह वनस्पति विहीन क्षेत्र है।
- राजस्थान मे थार मरुस्थल का क्षेत्र – 2/3 है।

बेरी – किसी जल स्त्रोत से रिसने वाले पानी का पुनः उपयोग के लिए छोटे–छोटे कुएँ बनाये जाते हैं।
डोल – लम्बाई मे स्थित बालुका स्तूप को डोल कहते हैं।

17. गुर्जर प्रतिहार

- बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन II का कर्नाटक से एक ऐहोल अभिलेख प्राप्त हुआ है इसकी भाषा संस्कृत है और रचनाकार रविकीर्ति है।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को पराजित किया था।

गुर्जर प्रतिहार/राजपूत काल/सामन्त काल (700–1200 ई.)

उत्पत्ति	संस्थापक	त्रिपक्षीय संघर्ष [2nd Grade 1st Paper - 2018]
1. पृथ्वीराज रासौ के अनुसार गुरू वशिष्ठ के अग्निकुण्ड से प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान उत्पन्न हुए	हरिश्चन्द्र (रोहलिद्धी)	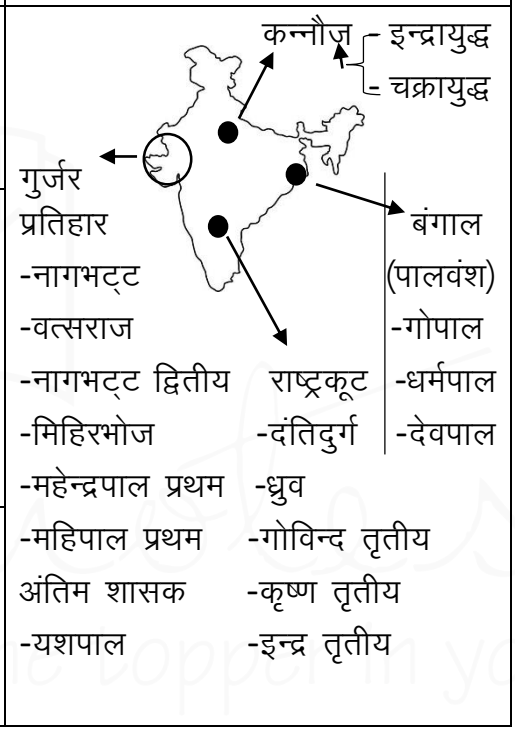
2. जेम्स टॉड के अनुसार खंजर जाति से विदेशी	पुत्र रज्जिल–राजधानी–मंडोर दह भोगभट्ट कदक	
3. हेनसांग के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार क्षत्रिय थे।	शिलालेख – घटियाला शिलालेख	
4. मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में लक्ष्मण का अवतार बताया गया।		

- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज को प्राप्त करने के लिए पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष लड़ा गया जिसमें कन्नौज अंतिम रूप से गुर्जर प्रतिहारों को प्राप्त हुआ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर एक भौगोलिक शब्दावली है जबकि प्रतिहार पद की जानकारी देता है जो कि राजा के महल के बाहर रक्षक का कार्य किया करते थे।
- हेनसांग ने गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र को कु.चे.लो. व राजधानी को पीलोभोलो कहा है।

[2nd Grade 1st Paper - 2018]

- अरब यात्री अलमसूदी के गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र के लिए अलगुर्जर, गुर्जर प्रतिहारों के लिए जुर्ज तथा राजा के लिए बौरा शब्द का प्रयोग किया है।
- डॉ. गौरीशंकर औझा के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार शासक क्षत्रिय थे।
- मुंहणोत नैणसी के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएँ थी। जिसमें से 2 शाखा महत्त्वपूर्ण थी –
  1. मंडोर के गुर्जर–प्रतिहार
  2. भीनमाल के गुर्जर–प्रतिहार
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से भी गुर्जर प्रतिहार शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।

- **संस्थापक** – जोधपुर से प्राप्त घटियाला शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक हरिश्चन्द्र को माना जाता है। हरिश्चन्द्र के पुत्र रज्जिल ने मंडोर को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- **रज्जिल** – रज्जिल के द्वारा राजसूय यज्ञ का आयोजन किया गया। यह राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर किया जाता था। रज्जिल के दरबारी विद्वान नरहरी ने 'रज्जिल' को राजा की उपाधि दी है।
- **नरभट्ट** – नरभट्ट को गुरु व ब्राह्मणों का संरक्षक कहा गया है।
  हेनसांग ने नरभट्ट के लिए शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है – साहसिक कार्य करने वाला।
- नागभट्ट नामक व्यक्ति गुर्जर–प्रतिहार शासक बना। इसने अपनी राजधानी 'मंडोर' से मेड़ता स्थानान्तरित की थी। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

भीनमाल (जालौर) के गुर्जर–प्रतिहार

यहाँ के शासकों ने स्वयं को रघुवंशी प्रतिहार कहा।

नागभट्ट प्रथम – 730 – 760 ई.

उपाधि – नागावलोक, मल्लेच्छों का नाशक, नारायण की मूर्ति का प्रतीक

[2nd Grade 1st Paper - 2019]

राजधानी – भीनमाल (जालौर)

- नागभट्ट प्रथम ने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित किया जो कि शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र माना गया।
- उज्जैन में नागभट्ट I के द्वारा हिरण्य गर्भदान यज्ञ का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य पुत्र रत्न की प्राप्ति करना था।
- नागभट्ट प्रथम ने राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग को भी इस यज्ञ के दौरान आमंत्रित किया था, अतः इस समय त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत नहीं हुई थी।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट I को मलेच्छों का नाशक कहा गया।
- पुलकेशियन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में नागभट्ट I को गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा गया।
- नागभट्ट प्रथम के बाद कक्कुल व देवराज गुर्जर प्रतिहार शासक बने।

वत्सराज – 783 – 95 ई.

उपाधि – रणहस्तिन (युद्ध का हाथी)
जयवराह – दुग्गल नामक ब्राह्मण के द्वारा दी गयी क्योंकि वत्सराज ने वैष्णव धर्म को संरक्षण प्रदान किया था।

- वत्सराज के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत हुई।
- वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार किया।
- बंगाल के शासक धर्मपाल को मुंगेर के युद्ध में पराजित किया, परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के हाथों पराजित हुआ।
  इस प्रकार वत्सराज के काल में कन्नौज पहली बार गुर्जर–प्रतिहारों को प्राप्त हुआ और वत्सराज के काल में कन्नौज गुर्जर प्रतिहारों के हाथों से निकल गया।
- वत्सराज के काल में गुर्जर प्रतिहारों का साम्राज्य विस्तार बंगाल तक हुआ।
- राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने अपनी उत्तर भारत विजय के उपलक्ष्य में गंगा व यमुना को अपने प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया था।

- वत्सराज के काल में संस्कृत भाषा में बली प्रबंध नामक लेख की रचना हुई जिसमें गुर्जर–प्रतिहार काल में प्रचलित सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था। वत्सराज के काल में जोधपुर के औसियां नाम स्थान पर महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण हुआ। यह पश्चिमी भारत का सबसे प्राचीन जैन मंदिर माना जाता है। गुर्जर–प्रतिहार शासकों द्वारा महामारू शैली में मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। महामारू शैली से तात्पर्य है – एक स्थान पर एक से ज्यादा मंदिरों का निर्माण।
- वत्सराज के काल में उद्योतन सूरी व जिनसेन सूरी नामक विद्वान हुए। उद्योतन सूरी के द्वारा ''कुवलयमाला'' तथा जिनसेन सूरी के द्वारा ''हरिवंश पुराण'' की रचना की गयी।

नागभट्ट द्वितीय (795–833 ई.)

- **उपाधि** – परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट द्वितीय को कर्ण कहा गया। नागभट्ट द्वितीय के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। इस समय राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय था। गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया था।
- गोविन्द तृतीय को जब दक्षिण में व्यस्त था तब नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण करके चक्रायुद्ध को पराजित किया और कन्नौज में गुर्जर प्रतिहारों की एक शाखा स्थापित की थी। नागभट्ट द्वितीय ने बंगाल के शासक धर्मपाल को भी हराया था।
- नागभट्ट द्वितीय के काल में जोधपुर के बुचकला नामक स्थान पर शिव–पार्वती व विष्णु मंदिर का निर्माण हुआ।
- नागभट्ट द्वितीय के बारे में जानकारी चन्द्रप्रभुसूरी की पुस्तक प्रभावक चरित्र से प्राप्त होती है।
- नागभट्ट द्वितीय के द्वारा गंगा में समाधि ली गयी थी।

रामभद्र (833–36 ई.)

रामभद्र के काल में मंडोर के गुर्जर प्रतिहार स्वतंत्र होने लगे। बंगाल के पाल शासकों ने भी गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। अतः रामभद्र की हत्या उसके पुत्र मिहिरभोज के द्वारा कर दी गयी। मिहिरभोज को गुर्जर प्रतिहार शासकों का पितृहन्ता कहा जाता है।

मिहिरभोज (836–855 ई.)

- **उपाधि** – आदिवराह (जयवराह की उपाधि वत्सराज ने धारण की थी)
  प्रभासपाटन
  संपूर्ण पृथ्वी का विजेता (बग्रमा अभिलेख, उत्तरप्रदेश)
- मिहिर – सूर्य का प्रतीक
- जानकारी के स्त्रोत
  - ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)
  - सागरताल प्रशस्ति (मध्यप्रदेश)
  - बग्रमा अभिलेख
- वैष्णव धर्म को संरक्षण दिये जाने के कारण आदिवराह की उपाधि ली जिसकी जानकारी ग्वालियर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- मिहिरभोज ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय को पराजित करके कन्नौज व मालवा पर अधिकार किया था।

- अरब यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज के काल में भारत की यात्रा की थी। सुलेमान मिहिरभोज को मुसलमानों का कट्टर शत्रु व इस्लाम की दीवार कहता है। मिहिरभोज ने अरब आक्रमणकारी जुनैद खाँ को पराजित किया और ताजिये निकाले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- मिहिरभोज के द्वारा चाँदी व ताँबे के सिक्कों का प्रचलन करवाया व इन सिक्कों पर श्रीमद् आदिवराह अंकित करवाया था।

महेन्द्रपाल प्रथम (885–910 ई.)

- **उपाधि –** रघुकुल, चूडामणि, निर्भय नरेश
- राजशेखर महेन्द्रपाल प्रथम के दरबारी कवि थे। राजशेखर के द्वारा निम्न पुस्तकों की रचना की गयी– कर्पूर मंजरी, बाल रामायण, विद्धशाल भंजिका, भुवनकोश, हरविलास, काव्य मीमांसा

महिपाल प्रथम (914–43 ई.)

- **उपाधि** – रघुकुल मुक्तामणी, मुकुटमणि, आर्यावर्त का महाराजाधिराज
- राजशेखर महिपाल I के भी दरबारी विद्वान थे।
- महिपाल प्रथम के काल में बगदाद निवासी 'अलमसूदी' ने भारत की यात्रा की थी।
- 1018 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया था। इस समय कन्नौज का शासक राजपाल/राज्यपाल था।
- 11वीं शताब्दी में गहड़वाल वंश के शासकों ने कन्नौज पर अधिकार किया था। कन्नौज का अंतिम शासक यशपाल था।